दादा भगवान प्ररूपित

वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी

दादा भगवान कथित

वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी

मूल गुजराती संकलन : डॉ. नीरू बहन अमीन

हिन्दी अनुवाद : महात्मागण

प्रकाशक : **अजीत सी. पटेल**
दादा भगवान विज्ञान फाउन्डेशन,
1, वरूण अपार्टमेन्ट, 37, श्रीमाली सोसायटी,
नवरंगपुरा पुलिस स्टेशन के सामने, नवरंगपुरा,
अहमदाबाद – 380009, Gujarat, India.
फोन : +91 79 3500 2100, +91 9328661166/77

कोपीराइट : © Dada Bhagwan Foundation,
5, Mamta Park Society, B\h. Navgujarat College, Usmanpura,
Ahmedabad - 380014, Gujarat, India.
Email : info@dadabhagwan.org
Tel : +91 9328661166/77

All Rights Reserved. No part of this publication may be shared, copied, translated or reproduced in any form (including electronic storage or audio recording) without written permission from the holder of the copyright. This publication is licensed for your personal use only.

प्रथम संस्करण : 3000, प्रतियाँ, जनवरी, 2001
रीप्रिन्ट : 38000, प्रतियाँ, अप्रैल, 2002 से सितम्बर, 2022
नई रीप्रिन्ट : 1000, प्रतियाँ, सितम्बर, 2025

भाव मूल्य : 'परम विनय' और
'मैं कुछ भी जानता नहीं', यह भाव!

द्रव्य मूल्य : 25 रुपए

मुद्रक : अंबा मल्टीप्रिन्ट
एच.बी.कापडिया न्यू हाइस्कूल के सामने,
छत्राल-प्रतापपुरा रोड, छत्राल,
ता. कलोल, जि. गांधीनगर-382729, गुजरात
फोन : +91 79 3500 2142

ISBN/eISBN : 978-93-86289-75-9

Printed in India

त्रिमंत्र

नमो अरिहंताणं

नमो सिद्धाणं

नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाणं

नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच नमुक्कारो

सव्व पावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसिं

पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ३ ॥

जय सच्चिदानंद

'दादा भगवान' कौन?

जून 1958 की एक संध्या का करीब छः बजे का समय, भीड़ से भरा सूरत शहर का रेलवे स्टेशन पर बैठे श्री ए.एम.पटेल रूपी देहमंदिर 'दादा भगवान' पूर्ण रूप से प्रकट हुए और कुदरत ने सर्जित किया अध्यात्म का अद्भुत आश्चर्य। एक घंटे में उन्हें विश्वदर्शन हुआ। 'मैं कौन? भगवान कौन? जगत् कौन चलाता है? कर्म क्या? मुक्ति क्या?' इत्यादि जगत् के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों के संपूर्ण रहस्य प्रकट हुए।

उन्हें प्राप्ति हुई, उसी प्रकार केवल दो ही घंटों में अन्य को भी प्राप्ति करवाते थे, उनके अद्भुत सिद्ध हुए ज्ञानप्रयोग से। उसे 'अक्रम मार्ग' कहा। क्रम अर्थात् सीढ़ी दर सीढ़ी, क्रमानुसार ऊपर चढ़ना! अक्रम अर्थात् बिना क्रम के, लिफ्ट मार्ग, शॉर्ट कट!

वे स्वयं प्रत्येक को 'दादा भगवान कौन?' का रहस्य बताते हुए कहते थे कि ''यह जो आपको दिखते हैं वे दादा भगवान नहीं हैं, हम ज्ञानी पुरुष हैं और भीतर प्रकट हुए हैं, वे 'दादा भगवान' हैं। जो चौदह लोक के नाथ हैं। वे आप में भी हैं, सभी में हैं। आपमें अव्यक्त रूप में रहे हुए हैं और 'यहाँ' हमारे भीतर संपूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं। मैं खुद भगवान नहीं हूँ। मेरे भीतर प्रकट हुए दादा भगवान को मैं भी नमस्कार करता हूँ।''

आत्मज्ञान प्राप्ति की प्रत्यक्ष लिंक

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) को 1958 में आत्मज्ञान प्रकट हुआ था। उसके बाद 1962 से 1988 तक देश-विदेश परिभ्रमण करके मुमुक्षुजनों को सत्संग और आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे।

दादाश्री ने अपने जीवनकाल में ही पूज्य डॉ. नीरू बहन अमीन (नीरू माँ) को आत्मज्ञान प्राप्त करवाने की ज्ञानसिद्धि प्रदान की थी। दादाश्री के देहविलय पश्चात् नीरू माँ उसी प्रकार मुमुक्षुजनों को सत्संग और आत्मज्ञान की प्राप्ति, निमित्त भाव से करवा रही थी।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपक भाई देसाई को दादाश्री ने सत्संग करने की सिद्धि प्रदान की थी। वर्तमान में पूज्य नीरू माँ के आशीर्वाद से पूज्य दीपक भाई देश-विदेश में निमित्त भाव से आत्मज्ञान प्राप्त करवा रहे हैं।

इस आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद हज़ारों मुमुक्षु संसार में रहते हुए, सभी ज़िम्मेदारियाँ निभाते हुए भी मुक्त रहकर आत्मरमणता का अनुभव करते हैं।

निवेदन

ज्ञानी पुरुष संपूज्य दादा भगवान के श्रीमुख से अध्यात्म तथा व्यवहारज्ञान से संबंधित जो वाणी निकली, उसको रिकॉर्ड करके, संकलन तथा संपादन करके पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया जाता है। विभिन्न विषयों पर निकली सरस्वती का अद्‌भुत संकलन इस पुस्तक में हुआ है, जो नए पाठकों के लिए वरदान रूप साबित होगा।

प्रस्तुत अनुवाद में यह विशेष ध्यान रखा गया है कि वाचक को दादा जी की ही वाणी सुनी जा रही है, ऐसा अनुभव हो, जिसके कारण शायद कुछ जगहों पर अनुवाद की वाक्य रचना हिन्दी व्याकरण के अनुसार त्रुटिपूर्ण लग सकती है, लेकिन यहाँ पर आशय को समझकर पढ़ा जाए तो अधिक लाभकारी होगा।

प्रस्तुत पुस्तक में कई जगहों पर कोष्ठक में दर्शाए गए शब्द या वाक्य परम पूज्य दादाश्री द्वारा बोले गए वाक्यों को अधिक स्पष्टतापूर्वक समझाने के लिए लिखे गए हैं। जबकि कुछ जगहों पर अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी अर्थ के रूप में रखे गए हैं। दादाश्री के श्रीमुख से निकले कुछ गुजराती शब्द ज्यों के त्यों *इटालिक्स* में रखे गए हैं, क्योंकि उन शब्दों के लिए हिन्दी में ऐसा कोई शब्द नहीं है, जो उसका पूर्ण अर्थ दे सके। हालांकि उन शब्दों के समानार्थी शब्द अर्थ के रूप में, कोष्ठक में और पुस्तक के अंत में भी दिए गए हैं।

ज्ञानी की वाणी को हिन्दी भाषा में यथार्थ रूप से अनुवादित करने का प्रयत्न किया गया है किन्तु दादाश्री के आत्मज्ञान का सही आशय, ज्यों का त्यों तो, आपको गुजराती भाषा में ही अवगत होगा। जिन्हें ज्ञान की गहराई में जाना हो, ज्ञान का सही मर्म समझना हो, वह इस हेतु गुजराती भाषा सीखें, ऐसा हमारा अनुरोध है।

अनुवाद से संबंधित कमियों के लिए आपसे क्षमाप्रार्थी हैं।

❖❖❖❖❖

संपादकीय

मोक्ष प्राप्ति की इच्छा किसे नहीं होती? लेकिन प्राप्ति का मार्ग मिलना कठिन है और मोक्षमार्ग के दाता के सिवा उस मार्ग पर कौन ले जाए?

पहले भी कई ज्ञानी पुरुष और तीर्थंकर हो चुके हैं और कितने ही लोगों को मोक्ष का ध्येय सिद्ध करवा गए। वर्तमान में तरणतारण ज्ञानी पुरुष 'दादाश्री' द्वारा यह मार्ग खुला है, अक्रम मार्ग के माध्यम से! क्रम से सीढ़ियाँ चढ़ना और अक्रम में लिफ्ट से चढ़ना, इनमें से कौन-सा आसान है? सीढ़ियाँ या लिफ्ट? इस काल में लिफ्ट ही पुसाएगा न, हर किसी को!

'इस काल में इस क्षेत्र से सीधे मोक्ष नहीं है' शास्त्र ऐसा कहते हैं लेकिन वाया महाविदेह क्षेत्र में श्री सीमंधर स्वामी के दर्शन से मोक्षप्राप्ति का मार्ग तो खुला ही है न, बहुत समय से! संपूज्य दादाश्री उसी मार्ग से मुमुक्षुओं को मोक्ष पहुँचाते हैं, उस प्राप्ति का विश्वास निश्चय ही मुमुक्षुओं को होता है।

इस काल में इस क्षेत्र में वर्तमान तीर्थंकर नहीं हैं जबकि इस काल में महाविदेह क्षेत्र में वर्तमान तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी विराजमान हैं और भरत क्षेत्र के मोक्षार्थी जीवों को मोक्ष प्राप्त करवाते हैं। ज्ञानी उस मार्ग से पहुँचकर औरों को वह मार्ग दिखाते हैं।

प्रत्यक्ष-प्रकट तीर्थंकर की पहचान होना, उनके प्रति भक्ति जागना और दिन-रात उनका संधान करके, अंत में उनके प्रत्यक्ष दर्शन पाकर केवलज्ञान प्राप्त होना, यही मोक्ष का प्रथम से अंतिम मार्ग है, ऐसा ज्ञानी बताते हैं।

श्री सीमंधर स्वामी की आराधना जितनी अधिक होगी, उतना ही उनके साथ संधान सतत विशेष रूप से रहेगा। इससे उनके साथ का ऋणानुबंध गाढ़ होता जाएगा। अंत में परम अवगाढ़ तक पहुँचकर, उनके चरणकमल में ही स्थानप्राप्ति की मोहर लगती है!

श्री सीमंधर स्वामी तक पहुँचने के लिए प्रथम तो इस भरत क्षेत्र के सभी ऋणानुबंधों से मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए और वह अक्रम ज्ञान द्वारा प्राप्त आत्मज्ञान और पाँच आज्ञाओं के पालन से हो सकता है! और

साथ-साथ श्री सीमंधर स्वामी की अनन्य भक्ति, दिन-रात आराधना करते करते उनके साथ ऋणानुबंध स्थापित होता है, जो इस देह के छूटते ही, वहाँ जाने का रास्ता बना देता है!

कुदरती नियम ऐसा है कि जैसी आंतरिक परिणतियाँ होती हैं, उसी अनुसार अगला जन्म निश्चित होता है। अभी भरत क्षेत्र में पाँचवाँ *'आरा'* (कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा) चल रहा है। सभी मनुष्य कलियुगी हैं। अक्रम विज्ञान प्राप्त करके ज्ञानी की आज्ञा का आराधन करने लगें, तभी से आंतरिक परिणतियाँ एकदम उच्च स्तर पर पहुँच जाती हैं। वे कलियुगी में से सतयुगी बन जाती हैं। भीतर चौथा *आरा* बर्तता रहता है। बाहर पाँचवाँ और भीतर चौथा आरा! आंतरिक परिणति में परिवर्तन होने से जहाँ चौथा *आरा* चल रहा हो, मृत्यु के बाद जीव वहीं पर खिंच जाता है और उसमें भी श्री सीमंधर स्वामी की भक्ति से उनके साथ ऋणानुबंध पहले से ही बाँध लिया होता है। इसलिए वह जीव उनके समीप, चरणों में खिंच जाता है! ये सब नियम हैं, कुदरत के!

संपूज्य दादाश्री हमेशा कहते थे कि जब मूल नायक सीमंधर स्वामी के मंदिरों का जगह-जगह निर्माण होगा, भव्य मंदिरों का निर्माण होगा, घर-घर सीमंधर स्वामी की पूजा-आरतियाँ होंगी, तब दुनिया का नक्शा कुछ और ही हो गया होगा!

भगवान श्री सीमंधर स्वामी के बारे में ज़रा सी बात करते ही लोगों के हृदय में उनके प्रति भक्ति शुरू हो जाती है! दिन-रात सीमंधर स्वामी को 'दादा भगवान' की साक्षी में नमस्कार करते रहना। प्रतिदिन सीमंधर स्वामी की आरती और चालीस बार नमस्कार करना।

साधारणतया परम कृपालु श्री दादा भगवान सभी मुमुक्षुओं को निम्नलिखित नमस्कार विधि के द्वारा श्री सीमंधर स्वामी से संधान करवाते थे।

'प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में विचरते तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।'

ये शब्द संधान नहीं है लेकिन उस समय मुमुक्षुओं को खुद श्री सीमंधर स्वामी को नमस्कार करते हों ऐसी अनुभूति होती है, वह संधान है।

'प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में' ऐसा शब्द प्रयोग इसलिए प्रयोजित किया गया है कि जब तक मुमुक्षु का श्री सीमंधर स्वामी के साथ सीधा तार नहीं जुड़ा है, तब तक जिनका निरंतर उनके साथ तार जुड़ा हुआ है, ऐसे ज्ञानी पुरुष श्री 'दादा भगवान' के माध्यम द्वारा, हम श्री सीमंधर स्वामी को अपने नमस्कार पहुँचाते हैं। जिसका फल प्रत्यक्ष किए गए नमस्कार जितना ही मिलता है। उदाहरण के तौर पर हमें कोई संदेश अमरीका पहुँचाना है लेकिन उसे हम स्वयं नहीं पहुँचा सकते, इसलिए हम वह संदेश डाक विभाग को सुपुर्द करके निश्चिंत हो जाते हैं। यह ज़िम्मेदारी डाक विभाग की है और वह उसे निभाता भी है। इसी प्रकार पूज्य दादाश्री, श्री सीमंधर स्वामी को अपना संदेश पहुँचाने की ज़िम्मेदारी खुद पर लेते हैं।

'दादा भगवान' को साक्षी रखकर नमस्कार विधि करना। यह नमस्कार विधि जिन्हें सम्यक् दर्शन प्राप्त हुआ है, वे समकिती महात्मा समझपूर्वक करें तो उसका फल कुछ और ही मिलता है! मंत्र बोलते समय एक-एक अक्षर ध्यान से पढ़ना चाहिए, इससे चित्त संपूर्णतः शुद्ध रहता है। संपूर्ण चित्तशुद्धि पूर्वक नमस्कार अर्थात् स्वयं को श्री सीमंधर स्वामी के मूर्ति स्वरूप को प्रत्यक्ष नमस्कार करते हुए देखना। प्रत्येक नमस्कार के साथ साष्टांग वंदना करते दिखना चाहिए। जब प्रभु का मूर्त स्वरूप दिखाई दें और साथ-साथ प्रभु का अमूर्त ऐसा केवलज्ञान स्वरूप, जो मूर्त स्वरूप से किस प्रकार भिन्न है, यह भी समझ में आ जाए, तब मानना श्री सीमंधर स्वामी के निकट पहुँच गए हैं। दादाश्री के श्रीमुख से श्री सीमंधर स्वामी के साथ संधान की बात सुनते ही अनेक लोगों को ऐसी अनुभूति होती है।

आशा है, जिन्हें दादाश्री का प्रत्यक्ष योग नहीं मिला हो, उन्हें यह पुस्तिका परोक्ष रूप से संधान की भूमिका स्पष्ट कर देगी। जो व्यक्ति वास्तव में मोक्ष का इच्छुक होगा, उसका श्री सीमंधर स्वामी के साथ

अवश्य संधान हो जाएगा। ऐसा पहले कभी उत्पन्न नहीं हुआ, वैसा श्री सीमंधर स्वामी के प्रति जबरदस्त आकर्षण उत्पन्न हो, तो समझ लेना कि प्रभु के चरणों में स्थान पाने के नगाड़े बजने लगे हैं।

सीमंधर स्वामी की प्रार्थना, विधि और सीमंधर स्वामी के चरणों में सदा मस्तक रखकर, निरंतर उनकी अनन्य शरण की भावना में रहना। संपूज्य दादाश्री ने बार-बार कहा है कि 'हम भी सीमंधर स्वामी के पास जाने वाले हैं और आप भी वहाँ पहुँचने की तैयारी करो। इसके बिना एकावतारी या दो अवतारी होना मुश्किल है!' यदि अगला जन्म फिर से इसी भरत भूमि में होगा तो यहाँ भीषण पाँचवा *आरा* चल रहा होगा। वहाँ मोक्ष की बात तो एक ओर रही लेकिन फिर से मनुष्य भव मिलना भी दुर्लभ है! ऐसे संयोगों में अभी से सावधान होकर, ज्ञानी के बताए गए मार्ग पर चलकर, एकावतारी पद की ही प्राप्ति कर लें! बार-बार ऐसा मौका मिलने वाला नहीं। बहते हुए पानी के प्रवाह को फिर से नहीं पकड़ा जा सकता। बीते हुए समय को भी फिर से नहीं लाया जा सकता। जो हाथ आया मौका गवाँ दे, उसे दूसरी बार मौका पाने का अवसर नहीं मिलता। इसलिए आज से ही जुट जाएँ और गाते रहें.. 'सीमंधर स्वामी के असीम जय जयकार हो!'

सीमंधर स्वामी कौन हैं? कहाँ हैं? कैसे हैं? उनका पद क्या है? उसके अलावा उनका महत्व कितना है? उनके बारे में जितनी संभव हो सके, उतनी समग्र जानकारी पूज्य दादाश्री के स्वमुख से निकली थीं, उसका यहाँ संक्षिप्त संकलन होकर प्रकाशित हो रहा है। जो मोक्षमार्गियों के लिए आराधना हेतु अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा!

– **डॉ. नीरू बहन अमीन**

श्री सीमंधर स्वामी का जीवन चरित्र

अपने भारत वर्ष के ईशान कोण में करोड़ों किलोमीटर की दूरी पर जंबूद्वीप के महाविदेह क्षेत्र की शुरूआत होती है। उसमें 32 विजय (क्षेत्र) हैं। इन विजयों में आठवीं विजय 'पुष्पकलावती' है। उसकी राजधानी श्री पुंडरिकगिरी है। इस नगरी में गत चौबीसी के सत्रहवें तीर्थंकर

श्री कुंथुनाथ भगवान के शासनकाल और अठारहवें तीर्थंकर श्री अरहनाथजी के जन्म से पहले श्री सीमंधर स्वामी भगवान का जन्म हुआ था। उनके पिता श्री श्रेयांस पुंडरिकगिरी नगरी के राजा थे। भगवान की माता का नाम सात्यकी था।

यथा समय महारानी सात्यकी ने अद्वितीय रूप और लावण्य वाले, सर्वांग-सुंदर स्वर्ण कांति वाले और वृषभ के लांछन वाले पुत्र को जन्म दिया। (वीर संवत् की गणनानुसार चैत्र कृष्णपक्ष दसवीं की मध्यरात्रि के समय) बाल जिनेश्वर का जन्म मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान सहित ही हुआ था। उनका देहमात्र पाँच सौ धनुष्य के बराबर है। राजकुमारी श्री रुकमणी को प्रभु की अर्धांगिनी बनने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ।

भरत क्षेत्र में बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत स्वामी और इक्कीसवें तीर्थंकर श्री नेमीनाथ जी के प्रागट्य काल के बीच, अयोध्या में राजा दशरथ के शासनकाल के दौरान और रामचंद्र जी के जन्म से पहले श्री सीमंधर स्वामी ने महाभिनिष्क्रमण उदय योग से फाल्गुन शुक्लपक्ष की तृतीया के दिन दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा अंगीकार करते ही उन्हें चौथा मनःपर्यव ज्ञान प्राप्त हुआ। दोष कर्मों की निर्जरा होते ही हज़ार वर्ष के छद्मस्थ काल के बाद शेष चार घाति कर्मों का क्षय करके, चैत्र शुक्ल की त्रयोदशी के दिन भगवान केवलज्ञानी और केवलदर्शनी बने। उनके दर्शन मात्र से ही जीव मोक्षगामी बनने लगे।

श्री सीमंधर स्वामी प्रभु के कल्याण यज्ञ के निमित्तों में चौरासी गणधर, दस लाख केवलज्ञानी महाराजा, सौ करोड़ साधु, सौ करोड़ साध्वियाँ, नौ सौ करोड़ श्रावक और नौ सौ करोड़ श्राविका हैं। उनके शासन रक्षक में यक्ष देव श्री चांद्रायण देव और यक्षिणी देवी श्री पांचांगुली देवी हैं।

अगली चौबीसी के आठवें तीर्थंकर श्री उदय स्वामी के निर्वाण के पश्चात् और नौवें तीर्थंकर श्री पेढाळ स्वामी के जन्म से पहले श्री सीमंधर स्वामी और अन्य उन्नीस विहरमान तीर्थंकर भगवंत श्रावण शुक्ल पक्ष तृतीया के अलौकिक दिन को चौरासी लाख पूर्व की आयु पूर्ण कर के निर्वाणपद प्राप्त करेंगे।

❖❖❖❖❖

वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी

वर्तमान तीर्थंकर की भक्ति से 'मोक्ष'!

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी कौन हैं? यह समझाने की कृपा कीजिए।

दादाश्री : सीमंधर स्वामी वर्तमान तीर्थंकर साहब हैं। वे इस पृथ्वी से बाहर दूसरे क्षेत्र, महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकर साहब हैं! ऋषभदेव भगवान हुए, महावीर भगवान हुए.. उनके जैसे सीमंधर स्वामी तीर्थंकर हैं।

तीन प्रकार के तीर्थंकर होते हैं। एक भूतकाल के तीर्थंकर, एक वर्तमान काल के तीर्थंकर और एक भविष्य काल के तीर्थंकर! इनमें भूतकाल के तो हो चुके। उन्हें याद करने से हमें पुण्यफल मिलेगा। उसके अलावा अभी जिसका शासन होता है न, उनकी आज्ञा में रहें तो धर्म उत्पन्न होता है। वह मोक्ष की ओर ले जाने वाला होता है!

लेकिन यदि कभी वर्तमान तीर्थंकर को याद करें तो उसकी बात ही अलग होती हैं! वर्तमान की ही कीमत है सारी, नकद रुपए हों, उसी की कीमत होती है। जो बाद में आएँगे वे रुपए भविष्य के! और गए वे तो गए! अत: नकद बात चाहिए हमें! इसलिए नकद की पहचान करवा देता हूँ न! और ये सारी बातें भी नकद हैं। दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन! नकद चाहिए, उधार नहीं चलेगा और चौबीस तीर्थंकरों को भी हम नमस्कार करते हैं न!

संयति पुरुष, चौबीस तीर्थंकरों को क्या कहते थे? अतीत (भूत

पूर्व) तीर्थंकर, अर्थात् जो भूतकाल में हो गए हैं, वे। पर वर्तमान तीर्थंकरों को खोज निकालो। भूतकाल के तीर्थंकरों की भजना से हमारी सांसारिक प्रगति होगी लेकिन मोक्ष फल प्राप्त नहीं होगा। मोक्ष फल तो आज जो हाज़िर हैं, वे ही दे सकते हैं।

'नमो अरिहंताणं' आज कौन?

लोग जो नवकार मंत्र बोलते हैं, वे किस समझ से बोलते हैं? मैंने उन लोगों से पूछा, तब मुझे बताया, 'चौबीस तीर्थंकर, वे ही अरिहंत हैं!' तब मैंने कहा, 'तुम अगर उन्हें अरिहंत कहोगे तब फिर सिद्ध किसे कहोगे? वे अरिहंत थे, अब तो सिद्ध हो चुके हैं, तो अभी अरिहंत कौन हैं? ये लोग अरिहंत मानते हैं, वे किन्हें 'नमो अरिहंताणं' मानते हैं? 'नमो अरिहंताणं' बोलते हैं या नहीं?

ये चौबीस तीर्थंकर हैं न, वे अरिहंत कहलाते हैं लेकिन जब तक वे जीवंत थे, तभी तक अरिहंत। अब वे तो निर्वाण होकर मोक्ष में चले गए न, इसलिए सिद्ध कहलाते हैं। अर्थात् सिद्धाणं पद में आए। तो अरिहंताणं कोई है नहीं। जो चौबीस तीर्थंकरों को ही अरिहंत मानते हैं, उन्हें मालूम नहीं है कि वे तजनाो सिद्ध हो चुके हैं। यानी इस तरह गलत चल रहा है। इसलिए नवकार मंत्र फल नहीं देता। फिर मैंने उन्हें समझाया कि अरिहंत अभी सीमंधर स्वामी हैं। जो हाज़िर हैं, जीवंत हैं, वे अरिहंत हैं।

जो तीर्थंकर हो गए, वे कहते गए हैं कि 'अब भरत क्षेत्र में चौबीसी बंद हो रही है, अब तीर्थंकर नहीं होंगे लेकिन महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकर हैं, उनकी भक्ति करना। वहाँ पर वर्तमान तीर्थंकर हैं।' लेकिन यह तो अब लोगों के *लक्ष* (जागृति) में ही नहीं रहा और उन चौबीस को ही अरिहंत कहते हैं, सभी लोग! बाकी भगवान तो सब कुछ बताकर गए हैं।

महावीर भगवान ने सब कुछ स्पष्ट किया था। महावीर भगवान जानते थे कि अब बाद में अरिहंत नहीं रहेंगे। किसे भजेंगे ये लोग? इसलिए उन्होंने स्पष्ट किया था कि महाविदेह क्षेत्र में बीस तीर्थंकर हैं

और उनमें श्री सीमंधर स्वामी भी हैं। यह बताया, इसलिए बाद में मान्य हुआ। मार्गदर्शन महावीर भगवान का, बाद में कुंदकुंदाचार्य को भी यही कड़ी मिली थी।

अरिहंत यानी वर्तमान में अस्तित्व होना चाहिए। जिनका निर्वाण हो चुका है, वे तो सिद्ध कहलाते हैं। निर्वाण के पश्चात्, उन्हें अरिहंत नहीं कह सकते।

नवकार मंत्र कब फलेगा?

इसलिए कहना पड़ा कि 'अरिहंत को नमस्कार करो।' तब पूछते हैं, कि 'अरिहंत कहाँ हैं अभी?' तब मैंने कहा, 'सीमंधर स्वामी को नमस्कार करो। सीमंधर स्वामी ब्रह्मांड में हैं। वे आज अरिहंत हैं। इसलिए उन्हें नमस्कार करो! वे मौजूद हैं। अरिहंत के रूप में होने चाहिए, तभी हमें फल मिलता है।' अतः पूरे ब्रह्मांड में जहाँ कहीं भी अरिहंत हों, उन्हें नमस्कार करता हूँ। ऐसा समझकर बोलें तो उसका फल बहुत सुंदर मिलता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वर्तमान में विहरमान बीस तीर्थंकर तो हैं न?

दादाश्री : हाँ, उन वर्तमान बीस को अरिहंत मानोगे तो आपका नवकार मंत्र फलेगा, नहीं तो नहीं फलेगा। यानी सीमंधर स्वामी की भजना ज़रूरी है, तब मंत्र फलेगा। कई लोग इन बीस तीर्थंकरों के बारे में नहीं जानने की वजह से, या तो 'उनका और हमारा क्या लेना-देना?' ऐसा सोचकर इन चौबीस तीर्थंकरों को ही 'ये अरिहंत हैं' ऐसा मानते हैं। आज वर्तमान में होने चाहिए, तभी फल प्राप्त होगा! ऐसी तो कितनी सारी गलतियाँ होने से यह नुकसान हो रहा है।

नवकार मंत्र बोलते समय साथ-साथ सीमंधर स्वामी ख्याल में रहने चाहिए, तब आपका नवकार मंत्र शुद्ध रूप से हुआ कहा जाएगा।

लोग मुझे कहते हैं कि आप सीमंधर स्वामी का क्यों बुलवाते हैं? चौबीस तीर्थंकरों का क्यों नहीं बुलवाते? मैंने कहा, 'चौबीस तीर्थंकरों का तो बोलते ही हैं लेकिन हम रीति के अनुसार बोलते हैं।

यह सीमंधर स्वामी का अधिक बोलते हैं क्योंकि वे वर्तमान तीर्थंकर हैं और 'नमो अरिहंताणं' उन्हीं को पहुँचता है।

यह तो प्रकट, प्रत्यक्ष, साक्षात् भगवान!

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी प्रकट कहलाते हैं?

दादाश्री : हाँ, वे प्रकट कहलाते हैं। प्रत्यक्ष, साक्षात् हैं। देहधारी हैं और अभी महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकर रूप में विचरण कर रहे हैं।

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी महाविदेह में हैं तो वे हमारे लिए प्रकट किस तरह कहलाएँगे?

दादाश्री : कलकत्ता में सीमंधर स्वामी हों, उन्हें देखा नहीं हो तब भी प्रकट माने जाएँगे, वैसे ही यह है, महाविदेह क्षेत्र का।

प्रत्यक्ष-परोक्ष की स्तुति में फर्क!

प्रश्नकर्ता : हम महावीर भगवान की स्तुति करें, प्रार्थना करें और सीमंधर स्वामी की स्तुति करें, प्रार्थना करें तो इन दोनों के फल में क्या फर्क पड़ेगा?

दादाश्री : भगवान महावीर की स्तुति वे खुद तो सुनते ही नहीं, फिर भी कोई सीमंधर स्वामी का नाम नहीं लेता हो बल्कि महावीर भगवान का नाम लेता हो तो भी अच्छा है। लेकिन महावीर भगवान का सुनेगा कौन? वे खुद तो सिद्धगति में जा बैठे हैं! उन्हें यहाँ से कुछ लेना-देना नहीं है! यह तो हम अपने आप रूपक बना-बनाकर स्थापित करते रहते हैं। वे अभी तीर्थंकर नहीं कहलाएँगे। वे तो अब सिद्ध ही कहलाएँगे। ये सीमंधर स्वामी हाज़िर हैं, वे ही फल देंगे।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् जो फल मिलता है वह उन्हीं का (सीमंधर स्वामी) 'नमो अरिहंताणं' का ही फल मिलता है, ऐसा हुआ न? 'नमो सिद्धाणं' का कोई फल नहीं?

दादाश्री : अन्य कुछ फल नहीं मिलता। वह तो, यदि हम तय कर लें कि 'भाई, कौन से स्टेशन जाना है?' तब कहे, 'भाई, आणंद

जाना है।' तो आणंद अपने *लक्ष* में रहता है। उसी तरह यह मोक्ष में जाना है, सिद्धगति में जाना है, वह *लक्ष* में रहता है। बाकी सर्व श्रेष्ठ उपकारी तो अरिहंत ही कहलाते हैं। अरिहंत किसे कहेंगे? जो हाज़िर हों, उन्हें। गैरहाज़िर हों, उन्हें अरिहंत नहीं कहते। प्रत्यक्ष-प्रकट होने चाहिए। इसलिए सीमंधर स्वामी पर अपना संपूर्ण *लक्ष* ले जाओ अब। वैसे तो बीस तीर्थंकर हैं लेकिन दूसरे कितने नाम हमें याद रहेंगे? इसके बजाय ये जो महत्व है, अपने हिंदुस्तान के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण माने गए हैं, वे सीमंधर स्वामी हैं, उन पर अपना *लक्ष* ले जाओ और उनके लिए जीवन अर्पित करो अब।

दृष्टि, भगवान के दर्शन की !

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में सीमंधर स्वामी की प्रवृत्ति क्या है?

दादाश्री : उन्हें कैसी प्रवृत्ति? बस, भगवान! लोग दर्शन करते हैं और वे वीतराग भाव से वाणी बोलते हैं।

प्रश्नकर्ता : देशना?

दादाश्री : हाँ, बस, देशना देते हैं।

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी महाविदेह क्षेत्र में और क्या करते हैं?

दादाश्री : करना उन्हें कुछ भी नहीं होता न। कर्म के उदय के अनुसार, बस। खुद के उदयकर्म जो करवाए, वैसा करते हैं। उनका खुद का इगोइज़म (अहंकार) खत्म हो चुका है और पूरा दिन ज्ञान में ही रहते हैं। महावीर भगवान रहते थे, वैसे। उनके फॉलोअर्स (अनुयायी) बहुत सारे हैं न।

दर्शन मात्र से ही मोक्ष!

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी के दर्शन का वर्णन कीजिए।

दादाश्री : सीमंधर स्वामी की आयु इस समय डेढ़ लाख वर्ष की हैं। वे ऋषभदेव भगवान जैसे हैं। ऋषभदेव भगवान पूरे ब्रह्मांड के भगवान कहलाते हैं। वैसे ये भी पूरे ब्रह्मांड के भगवान कहलाते

हैं। वे अपने यहाँ नहीं बल्कि दूसरी भूमि पर हैं। वहाँ मनुष्य नहीं जा सकता। ज्ञानी खुद की शक्ति को वहाँ भेजते हैं। पूछकर फिर वापस आती है। वहाँ स्थूल शरीर से नहीं जा सकते लेकिन वहाँ जन्म होगा, तभी जा सकते हैं।

अपने यहाँ भरत क्षेत्र में तीर्थंकरों का जन्म होता था लेकिन ढाई हज़ार साल से बंद है! तीर्थंकर यानी आखिरी, 'फुल मून' (पूर्ण चंद्र)! लेकिन वहाँ महाविदेह क्षेत्र में सदैव तीर्थंकर जन्म लेते हैं। सीमंधर स्वामी आज वहाँ विद्यमान हैं।

प्रश्नकर्ता : वे अंतर्यामी हैं?

दादाश्री : वे हमें देख सकते हैं। हम उन्हें नहीं देख सकते। वे पूरी दुनिया देख सकते हैं।

सीमंधर स्वामी दूसरे क्षेत्र में हैं। यह सारी बात बुद्धि से परे है लेकिन मेरे ज्ञान में आई है। यह लोगों की समझ में नहीं आती। लेकिन हमें एक्ज़ेक्ट (जैसा है वैसा) समझ में आती है। उनके दर्शन करने से लोगों का बहुत कल्याण हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : उनकी देह कैसी है? मनुष्य जैसी? अपने जैसी?

दादाश्री : देह अपने जैसी ही, मनुष्य जैसी ही देह है।

प्रश्नकर्ता : उनकी देह का परिमाण क्या है?

दादाश्री : परिमाण बहुत विशाल है। हाइट बहुत ऊँची है। उनकी आयु लंबी है और सभी बातें ही अलग हैं।

महाविदेह क्षेत्र कहाँ? कैसा?

प्रश्नकर्ता : जहाँ सीमंधर स्वामी विचर रहे हैं, वह महाविदेह क्षेत्र कहाँ है?

दादाश्री : वह तो अपने इस भरत क्षेत्र से बिल्कुल अलग है, ईशान दिशा में है। सभी क्षेत्र अलग-अलग हैं। वहाँ ऐसे नहीं जा सकते।

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र, वह अपने भरत क्षेत्र से अलग माना जाता है?

दादाश्री : हाँ, अलग। सिर्फ महाविदेह क्षेत्र ही ऐसा है, जहाँ सदैव तीर्थंकर जन्म लेते हैं और अपने क्षेत्र में निश्चित समय में ही तीर्थंकर जन्म लेते हैं, बाद में नहीं होते। अपने यहाँ कुछ समय के लिए तीर्थंकर नहीं होते लेकिन अभी जो ये सीमंधर स्वामी हैं, वे अपने लिए हैं। वे अभी लंबे समय तक रहने वाले हैं।

भूगोल, महाविदेह क्षेत्र का!

प्रश्नकर्ता: अब महाविदेह क्षेत्र के बारे में थोड़ा विस्तार से बताइए न। इतने योजन दूर यह मेरू पर्वत, ये जो सारी बातें शास्त्र में लिखी हैं, वे सही हैं?

दादाश्री : सही हैं। उनमें फर्क नहीं। तथ्यपूर्ण बातें हैं। हाँ, कितने साल का आयुष्य और अभी कितने साल रहेंगे, वह सब सुनियोजित है। पूरा ब्रह्मांड है, उसमें मध्यलोक है और इसमें पंद्रह प्रकार के क्षेत्र हैं। यह मध्यलोक गोलाकार है। लोगों को यह दूसरी कुछ बातें समझ में नहीं आएँगी क्योंकि एक वातावरण में से दूसरे वातावरण में नहीं जा सकते, ऐसे क्षेत्र हैं भीतर। मनुष्य के जन्म होने लायक और मनुष्य के रहने लायक पंद्रह क्षेत्र हैं। इनमें से एक यह अपनी भूमि है। इसके उपरांत अन्य चौदह हैं। उनमें भी जहाँ देखो वहाँ अपने जैसे ही मनुष्य हैं। अपने यहाँ कलियुगी हैं और वहाँ सत्युगी हैं। कहीं कहीं कलियुग है और किसी जगह सत्युग भी। इस तरह से मनुष्य हैं और वहाँ पर, महाविदेह क्षेत्र में तो अभी सीमंधर स्वामी स्वयं विद्यमान हैं। अभी उनकी डेढ़ लाख वर्ष की उम्र हैं और अभी सवा लाख साल तक रहने वाले हैं। भगवान रामचंद्र जी के समय में उन्हें देखा था। उससे पहले ही वे जन्मे थे। रामचंद्र जी ज्ञानी थे। उनका जन्म यहाँ पर हुआ था लेकिन वे सीमंधर स्वामी को देख सके थे। सीमंधर स्वामी तो उनके पहले से, बहुत पहले से हैं। ये जो सीमंधर स्वामी हैं, उन्हें जगत् कल्याण करना है।

श्री सीमंधर स्वामी, भरत क्षेत्र के कल्याण के निमित्त!

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में अभी तीर्थंकर विराजमान हैं, वैसे ही अन्य किसी क्षेत्र में कोई तीर्थंकर विराजमान हैं?

दादाश्री : इन पाँच भरत क्षेत्र में और पाँच ऐरावत क्षेत्र में, वर्तमान में तीर्थंकर विराजमान नहीं हैं। अन्य पाँच महाविदेह क्षेत्र हैं, वहाँ इस समय चौथा आरा है, वहाँ पर तीर्थंकर विचर रहे हैं। वहाँ सदैव चौथा आरा रहता है और अपने यहाँ तो पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, छठा-इस तरह *आरे* बदलते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : यहाँ पर तीर्थंकर कब होते हैं?

दादाश्री : यहाँ तीसरे-चौथे *आरे* में तीर्थंकर होते हैं!

प्रश्नकर्ता : और तीर्थंकर, वे अपने यहाँ, हिंदुस्तान में ही होते हैं, अन्य कहीं नहीं होते?

दादाश्री : इसी भूमि पर! यही भूमि, हिंदुस्तान की ही! इसी भूमि पर तीर्थंकर होते हैं, दूसरी जगह पैदा ही नहीं होते। चक्रवर्ती भी इसी भूमि पर होते हैं, अर्धचक्री भी इसी भूमि पर होते हैं। तिरेसठ शलाका पुरुष सभी यहीं होते हैं।

प्रश्नकर्ता : इस भूमि की कुछ महत्वता होगी?

दादाश्री : यह भूमि बहुत उच्च मानी जाती है!

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी का ही पूजन किसलिए? अन्य वर्तमान तीर्थंकरों का पूजन क्यों नहीं?

दादाश्री : सभी तीर्थंकरों का हो सकता है लेकिन सीमंधर स्वामी का यहाँ हिंदुस्तान के साथ हिसाब है, भाव है उनका। बीस तीर्थंकरों में से विशेष रूप से सीमंधर स्वामी की भजना करनी चाहिए, क्योंकि अपने भरत क्षेत्र के सब से नज़दीक वे ही हैं और भरत क्षेत्र के साथ उनका ऋणानुबंध है।

वर्तमान में बीस तीर्थंकर हैं, उनमें से सिर्फ तीर्थंकर श्री सीमंधर

स्वामी का ही भरत क्षेत्र के साथ ऋणानुबंध, हिसाब है। तीर्थंकरों का भी हिसाब होता है और सीमंधर स्वामी तो आज साक्षात् प्रकट हैं।

यानी अब आप अरिहंत किसे मानेंगे? इन सीमंधर स्वामी को, और जो अन्य उन्नीस तीर्थंकर हैं, वे सभी अरिहंत ही हैं लेकिन उन सभी तीर्थंकरों के साथ संबंध रखने की ज़रूरत नहीं है। एक के साथ रखें तो उसमें बाकी के सभी आ जाएँगे। अतः सीमंधर स्वामी के दर्शन करना। 'हे अरिहंत भगवान! आप ही सच्चे अरिहंत हैं अभी!' ऐसा बोलकर नमस्कार करना।

वहाँ है, मन-वचन-काया की एकता!

महाविदेह क्षेत्र में भी मनुष्य हैं। वे अपने जैसे हैं, देहधारी ही हैं। वहाँ भी मनुष्यों की सभी भावनाएँ अपने जैसी ही हैं।

प्रश्नकर्ता : वहाँ आयुष्य लंबा होता है न दादा जी?

दादाश्री : हाँ, आयुष्य लंबा होता है, वह तो बहुत लंबा होता है। बाकी, अपने जैसे मनुष्य हैं, अपने जैसा व्यवहार है लेकिन अपने यहाँ चौथे *आरे* में जैसा व्यवहार था, वैसा है। इस पाँचवें *आरे* के लोग अब तो जेब काटना सीख गए और भीतर ही भीतर सगे-संबंधियों में भी उल्टा बोलना सीख गए हैं। ऐसा व्यवहार वहाँ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : वहाँ पर भी ऐसा ही संसार है सारा?

दादाश्री : हाँ, ऐसा ही सब। वह भी सारी कर्मभूमि हैं, वहाँ पर भी 'मैं करता हूँ' ऐसा भान होता है। अहंकार, क्रोध-मान-माया और लोभ भी हैं ही। वहाँ पर इस समय तीर्थंकर हैं। चौथे *आरे* में तीर्थंकर होते हैं। बाकी अन्य सभी बातें अपने जैसी ही है।

चौथे और पाँचवे *आरे* में फर्क क्या होता है? तब कहते हैं, चौथे *आरे* में मन-वचन-काया की एकता होती है और पाँचवें *आरे* में यह एकता टूट जाती है। अर्थात् मन में जैसा हो, वैसा वाणी से नहीं बोलते और वाणी में हो ऐसा वर्तन में नहीं लाते, उसका नाम पाँचवाँ *आरा*। और चौथे *आरे* में तो जैसा मन में हो वैसा ही वाणी

से बोलते हैं और वैसा ही करते हैं। कोई व्यक्ति वहाँ पर चौथे *आरे* में कहे कि 'मुझे पूरा गाँव जला देने का विचार आ रहा है' तब हमें समझना चाहिए कि यह रूपक में आने वाला है और यहाँ आज कोई कहे कि 'मैं तुम्हारा घर जला दूँगा।' तब हमें समझना है, कि अभी तो विचार में है, तुम मुझे कब मिलोगे?' मुँह से बोला हो फिर भी कुछ बरकत नहीं। 'मैं तुम्हें मार डालूँगा' कहे लेकिन कुछ आधार नहीं है, मन-वचन-काया की एकता नहीं है। तब फिर कहे अनुसार कैसे कार्य होगा? कार्य होगा ही नहीं न!

कैसे जा सकते हैं, वहाँ?

प्रश्नकर्ता : वहाँ जाना हो तो किस स्थिति में मनुष्य जा सकता है?

दादाश्री : वह वहाँ के जैसा हो जाए। जब चौथे *आरे* के लोगों जैसा हो जाए, इस पाँचवे *आरे* के दुर्गुण चले जाएँ, तब वहाँ जाता है। कोई गाली दे, फिर भी मन में उसके लिए बुरा भाव नहीं आए, तब वहाँ जा पाएगा।

प्रश्नकर्ता : सामान्यत: यहाँ से सीधे मोक्ष में नहीं जाया जा सकता। पहले महाविदेह क्षेत्र में जाना और बाद में मोक्ष में जाना, ऐसा कैसे होता है?

दादाश्री : क्षेत्र का स्वभाव ऐसा है कि मनुष्य जिस *आरे* के लायक हो जाएँ, यहाँ पर जो चौथे *आरे* जैसे हो जाएँ, यहाँ पर यह ज्ञान नहीं मिला हो और अन्य लोग भी ऐसे हों, तो वे वहाँ खिंच जाएँगे और वहाँ जो पाँचवें *आरे* जैसे हो जाएँ, वे यहाँ पाँचवे *आरे* में आ जाते हैं, ऐसा इस क्षेत्र का स्वभाव है। किसी को लाना-ले जाना नहीं पड़ता। क्षेत्र स्वभाव से ये सभी लोग तीर्थंकर के पास पहुँच जाएँगे। अत: जो सीमंधर स्वामी को रटते रहते हैं, उन्हें भजते हैं और बाद में वहाँ उनके दर्शन करेंगे और उनके पास बैठेंगे और वे लोग मोक्ष में चले जाएँगे।

जिन्हें हम ज्ञान देते हैं, वे एक-दो अवतारी होंगे। फिर उन्हें वहाँ सीमंधर स्वामी के पास ही जाना है। उनके दर्शन करने हैं, तीर्थंकर

के दर्शन करना मात्र शेष रहा। बस, दर्शन होने से ही मोक्ष। अन्य सभी दर्शन हो गए। वह आखिरी दर्शन करें न, इन दादा जी से आगे के वे दर्शन हैं। वे दर्शन हुए कि तुरंत मोक्ष!

प्रश्नकर्ता : जितने लोग सीमंधर स्वामी के दर्शन करते हैं, वे सभी बाद में मोक्ष में जाएँगे न?

दादाश्री : वह दर्शन करने से मोक्ष में जाएँगे, ऐसा कुछ नहीं होता। उनकी कृपा प्राप्त होनी चाहिए। हृदय शुद्ध हो जाए, वहाँ पर हृदय शुद्ध हो जाए, उसके बाद उनकी कृपा उतरती जाएगी। यह तो सुनने के लिए आएँ और कान को बहुत मधुर लगा लेकिन सुनकर फिर वे जहाँ थे, वहीं के वहीं। उसे तो सिर्फ चटनी ही पसंद है। पूरी थाली नहीं खाता, सिर्फ चटनी के लिए थाली लेकर बैठा रहे तो मोक्ष नहीं होता।

उनके लिए तो सामने चलकर आए महाविदेह क्षेत्र

जिसे यहाँ 'शुद्धात्मा' का *लक्ष* बैठा हो, वह यहाँ पर भरत क्षेत्र में रह ही नहीं सकता। जिसे आत्मा का *लक्ष* बैठा हो, वह महाविदेह क्षेत्र में पहुँच ही जाता है, ऐसा नियम है! यहाँ इस दुषमकाल में रह ही नहीं सकता। जिसे शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठा, वह महाविदेह क्षेत्र में एक या दो जन्म लेकर तीर्थंकर के दर्शन करके मोक्ष में चला जाता है, ऐसा आसान और सरल मार्ग है यह!

उनका संधान 'दादा भगवान' के द्वारा

सीमंधर स्वामी भगवान को 'फोन' करना हो तो फोन का माध्यम होना चाहिए, तब फोन पहुँचेगा। वह माध्यम है ये 'दादा भगवान'। बोलो, महावीर भगवान यदि आज अभी यहाँ दिल्ली में हों और यहाँ से नाम लें तो उन तक पहुँच जाता है। वैसे ही यह भी पहुँच जाता है! यह फोन ज़रा आधा मिनट देर से पहुँचता है, लेकिन पहुँच जाता है।

वे खुद हाज़िर हैं लेकिन अपनी दुनिया में नहीं हैं, दूसरी दुनिया में हैं। उनके साथ हमारा तार वगैरह चलता रहता है। इस पूरे जगत् का कल्याण होना ही चाहिए। हम तो निमित्त हैं। इसलिए 'दादा

भगवान' थ्रू दर्शन करवाता हूँ और वह वहाँ तक पहुँच जाता है। इसीलिए हमने एक जन्म कहा है न! यहाँ से बाद में वहीं पर जाना है और उनके निकट बैठना है। बाद में मुक्ति होगी। इसलिए आज से ही पहचान करवा देते हैं और 'दादा भगवान' थ्रू नमस्कार करवाते हैं।

सीमंधर स्वामी के साथ हमारी इतनी अच्छी पहचान है कि हमारे कहे अनुसार आप दर्शन करोगे तो उन तक पहुँचेगा।

..वह 'दादा भगवान' थ्रू पहुँचेगा ही

प्रश्नकर्ता : हम भक्ति करें तो सीमंधर स्वामी तक कैसे पहुँचेगी? क्योंकि वे तो महाविदेह क्षेत्र में हैं और हम यहाँ पर हैं।

दादाश्री : अपने यहाँ कलकत्ता में हों तो पहुँचेगा या नहीं पहुँचेगा?

प्रश्नकर्ता : वह पहुँचेगा लेकिन यह तो बहुत दूर है न?

दादाश्री : कलकत्ता जैसा ही है वह, आँख से नहीं दिखाई देता। वह सब कलकत्ता ही कहलाता है। वे कलकत्ता में हों या बड़ौदा में, वे अभी आँख से नहीं दिखाई देते न!

प्रश्नकर्ता : अर्थात् हम जो भक्ति करें, भाव करें तो वह सब उन्हें वहाँ...

दादाश्री : तुरंत ही पहुँच जाता है। एक प्रत्यक्ष और एक परोक्ष। परोक्ष तो कितना दूर होता है और प्रत्यक्ष तो सामने होता है कि जो आँखों से देख सकते हैं, इन्द्रियों से!

प्रश्नकर्ता : तो फिर उस परोक्ष का लाभ कितना लेकिन? परोक्ष और प्रत्यक्ष के लाभ में अंतर कितना?

दादाश्री : परोक्ष तो यदि तीन मील दूर हों या लाख मील दूर हों तो भी वही का वही! अर्थात् दूर हों तो उसमें कोई हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वे प्रत्यक्ष विचरते हुए तीर्थंकर हैं न?

दादाश्री : वह तो, मूलतः तो प्रत्यक्ष के बिना कोई काम होता ही नहीं न!

अभी तो यह आपसे पहचान करवा रहे हैं। हम यह हर रोज़ बुलवाते हैं न, तो वहाँ जाना पड़ेगा। उनके दर्शन करोगे, उस दिन मुक्ति! वह आखिरी दर्शन!

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में?

दादाश्री : हाँ, हम तो खटपटिया (कल्याण के लिए खटपट करने वाले) हैं। हमारे पास एकावतारी पद प्राप्त होता है। एकावतारी हो जाता है। हमारे पास पूर्ण नहीं हो पाते इसलिए सीमंधर स्वामी का नाम बुलवाते हैं न! हर रोज़ दर्शन सीमंधर स्वामी के, वहाँ के पंच परमेष्ठी के, अन्य उन्नीस तीर्थंकरों के, यह सब जो हम बुलवाते हैं, वह एक ही हेतु के लिए कि अब आराधक पद आपका वहाँ पर है।

अब यहाँ, आराधक पद नहीं रहा, इस क्षेत्र में! इसलिए हम उनसे 'दादा भगवान' की साक्षी में पहचान करवाते हैं। मैंने एक आदमी से कहा, भाई, तुम ऐसा मानो न कि तुम महाविदेह क्षेत्र में हो, यही महाविदेह क्षेत्र है ऐसा कल्पना से मानो और सीमंधर स्वामी, वहाँ कलकत्ता में हैं, तो यहाँ से तुम कितनी बार कलकत्ता दर्शन करने जाओगे? कितनी बार जाओगे?

प्रश्नकर्ता : एक बार या ज़्यादा से ज़्यादा दो बार।

दादाश्री : हाँ, ज़्यादा से ज़्यादा दो बार। तो महाविदेह क्षेत्र में भी यदि इतना लाभ मिलता हो, तो अपने इस क्षेत्र में मेरे पास ऐसी चाबी है कि रोज़ का लाभ करवा देता हूँ। मेरे पास ऐसी चाबी है कि हर रोज़ का लाभ। इसलिए सीमंधर स्वामी तीर्थंकर भी नोट करते हैं कि ऐसे भक्त कोई हुए नहीं कि जो रोज़-रोज़ दर्शन करते हैं! रहते हैं परदेश में और प्रतिदिन दर्शन करने आते हैं! हमें न तो गाड़ी चाहिए न ही घोड़ा! दादा भगवान के थ्रू कहा कि पहुँच गया।

बिना माध्यम के नहीं पहुँचता

प्रश्नकर्ता : प्रत्यक्ष 'दादा भगवान' की साक्षी में, सीमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ, वह सीमंधर स्वामी को पहुँचता है। वे देख सकते हैं, यह हकीकत है न?

दादाश्री : वे देखने में सामान्य भाव से देखते हैं। तीर्थंकर, विशेष भाव से नहीं देखते। यह दादा भगवान के माध्यम से कहा है, इसलिए वहाँ पहुँचता है। यानी बिना माध्यम के नहीं पहुँच सकता न!

अलग, मैं और 'दादा भगवान'

पुस्तक में जैसे लिखा है कि ये जो दिखाई देते हैं, वे 'ए.एम. पटेल' हैं, मैं ज्ञानी पुरुष हूँ और भीतर 'दादा भगवान' प्रकट हुए हैं और वे चौदह लोक के नाथ हैं। जो कभी सुनने में नहीं आया हो, ऐसे ये यहाँ प्रकट हुए हैं इसलिए 'मैं खुद ही भगवान हूँ', ऐसा हम कभी भी नहीं कहते। वह तो पागलपन है, मेडनेस है। जगत् के लोग कहें, लेकिन हम ऐसा नहीं कहते कि हम ऐसे हैं। हम तो साफ-साफ कहते हैं और मैं तो 'भगवान हूँ' ऐसा भी नहीं कहता। 'मैं तो ज्ञानी पुरुष हूँ' और तीन सौ छप्पन डिग्री पर हूँ। यानी चार डिग्री का फर्क है। 'दादा भगवान' की बात अलग है और व्यवहार में मैं खुद को 'ए.एम.पटेल' कहता हूँ।

अब इस भेद के बारे में लोगों को ज़्यादा समझ में नहीं आता, यानी कि 'दादा भगवान' भीतर प्रकट हुए हैं। जो चाहे सो काम निकाल लो। ऐसा साफ-साफ कहता हूँ। कभी कभार ही ऐसा चौदह लोक का नाथ प्रकट होता है। मैं खुद देखकर कह रहा हूँ, इसलिए काम निकाल लो।

वह दर्शन, तुरंत ही पहुँचे

सभी लोग सवेरे नींद से उठें तो भीड़ हो जाती है न? और शाम को तो निरी भीड़ ही होती है। इसलिए सुबह साढ़े चार से साढ़े छः, वह तो ब्रह्ममुहूर्त कहलाता है। सब से उच्च मुहूर्त। उस समय जिसने ज्ञानी पुरुष का स्मरण किया, तीर्थंकरों का स्मरण किया, शासन देवी-देवताओं का स्मरण किया, तो वह सब पहले स्वीकार हो जाता है, सभी को! क्योंकि बाद में लोग बढ़ जाते हैं न! एक आया, फिर दूसरा आया। फिर भीड़ होने लगती है न! सात बजे से भीड़ होने लगती है। फिर बारह बजे ज़बरदस्त भीड़ हो जाती है। अतः जो सब से पहले जाकर खड़ा रहेगा, उसे भगवान के 'फ्रेश' दर्शन होंगे। 'दादा

भगवान की साक्षी में सीमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ' बोलते ही तुरंत नमस्कार सीमंधर स्वामी को पहुँच जाते हैं। उस समय वहाँ कोई भीड़ नहीं होती। बाद में भीड़ में भगवान भी क्या करें? इसलिए साढ़े चार से साढ़े छः तो अपूर्व काल कहलाता है! युवा लोगों को तो यह मौका छोड़ना ही नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : आपने हमें सवेरे सीमंधर स्वामी को चालीस बार नमस्कार करने को कहा है, तो उस समय यहाँ पर सुबह हो और वहाँ के समय में डिफरेन्स होगा न?

दादाश्री : हमें वह नहीं देखना है। सुबह कहने का भावार्थ ऐसा है कि अन्य काम-काज पर जाने से पहले। अगर व्यापार नहीं हो तो किसी भी समय, दस बजे करो, बारह बजे करो!

वहाँ जाया जा सकता है, लेकिन सदेह नहीं

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी वहाँ पर हैं। आप तो रोज़ दर्शन करने जाते हैं तो वह किस तरह? वह हमें समझाइए।

दादाश्री : हम जाते हैं लेकिन हम रोज़ दर्शन करने नहीं जा सकते। हम, ज्ञानी पुरुष के यहाँ से (कंधे से) एक लाइट वाला प्रकाश निकलता है और निकलकर जहाँ तीर्थंकर हैं, वहाँ जाकर प्रश्न का समाधान लेकर फिर वापस आ जाता है। जब कभी समझ में फर्क पड़ जाता है, समझने में कुछ भूल हो, तब पूछकर आता है। बाकी, हम सदेह आ-जा नहीं सकते, महाविदेह क्षेत्र ऐसा नहीं है!

हमारा सीमंधर स्वामी के साथ तार जुड़ा हुआ है। हम सभी प्रश्न वहाँ पूछते हैं और उन सभी के उत्तर मिल जाते हैं। आज तक हमें लाखों प्रश्न पूछे गए होंगे और उन सभी के उत्तर हमने दिए होंगे, लेकिन वह सब स्वतंत्र रूप से नहीं है, सब के जवाब हमें वहाँ से आए थे। सभी उत्तर नहीं दिए जा सकते न! जवाब देना क्या कोई आसान बात है? एक भी व्यक्ति, पाँच जवाब भी नहीं दे सकता! जवाब दे, उतनी देर में तो वाद-विवाद शुरू हो जाए। यह तो एक्ज़ेक्ट जवाब आते हैं इसलिए सीमंधर स्वामी की भजना करते हैं न!

इस काल में भावी तीर्थंकर कोई बन ही नहीं सकता

प्रश्नकर्ता : दादा, अभी ये जो सब लोग हैं, दादा जी के ज्ञान प्राप्त महात्मा हैं, उनमें से कितने तीर्थंकर बनेंगे? ये जो दादा जी का ज्ञान लिए हुए महात्मा हैं, जो पचास हज़ार होंगे, जितने भी महात्मा हैं, थोड़े नज़दीक के होंगे, थोड़े दूर के होंगे, उनमें से कितने तीर्थंकर बनेंगे?

दादाश्री : तीर्थंकर, इसमें तीर्थंकर का पता नहीं है। इसमें ऐसा है न तीर्थंकर नहीं, सभी केवली होंगे। केवलज्ञानी होकर मोक्ष में जाएँगे सभी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन तीर्थंकर क्यों नहीं बन सकते?

दादाश्री : तीर्थंकर नहीं, वह गोत्र बहुत उच्च गोत्र होता है। वह गोत्र तो कब बंधता है कि जब चौथे *आरे* में या तीसरे *आरे* में तीर्थंकर हाज़िर हों, तब बंधा हो तो चलेगा। अभी गोत्र बाँधोगे तो नहीं चलेगा। यानी अभी नया गोत्र नहीं बंध सकता। पुराना बंधा हुआ हो तो हमें पता चल जाता है। इसमें तीर्थंकर बनने में कोई विशेष फायदा नहीं है। हमें तो मोक्ष में जाने से फायदा है। तीर्थंकर को भी मोक्ष में ही जाना है न!

प्रश्नकर्ता : कितने सालों में गोत्र बदलता है, अपना? गोत्र किस प्रकार बदलता है?

दादाश्री : वह तो यदि अच्छा काल हो और तीर्थंकर स्वयं हाज़िर हों, तब तीर्थंकर गोत्र बंध जाता है।

प्रश्नकर्ता : दादा जी, लेकिन अब कलियुग के बाद सत्युग ही आने वाला है न? अर्थात् अच्छा काल ही आएगा न?

दादाश्री : नहीं, लेकिन जब तीर्थंकर होंगे तभी न! उनके आने से पहले, इनमें से ज़्यादातर मोक्ष में चले जाएँगे!

प्रश्नकर्ता : मुझे बार बार ऐसा होता रहता है कि हम तीर्थंकर क्यों नहीं बन सकते? या फिर सीधे मोक्ष में ही जाएँगे? फिर आपसे

यह जानने को मिला कि तीर्थंकर गोत्र बाँधा हो तभी तीर्थंकर हुआ जा सकता है। तो अब हम किस प्रकार गोत्र बाँध सकते हैं?

दादाश्री : अब भी तुझे फिर से लाख बरस अवतार करने हों तो बंध सकेगा। तो फिर से बंधवा दूँ और फिर सातवें नर्क में बहुत बार जाना पड़ेगा। कितनी ही बार नर्क में जाए, तब जाकर ऐसे अच्छे पद मिलते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसे अच्छे पद प्राप्त करने हों तो नर्क में जाने में क्या हर्ज है?

दादाश्री : रहने दे, तेरी होशियारी रहने दे, चुपचाप! समझ जा। ज़रा सा तप करना पड़ेगा, उस घड़ी पता चल जाएगा! और वहाँ तो बहुत सारे तप करने पड़ते है और नर्क की बात तुझे सुनाऊँ न तो सुनते ही मनुष्य मर जाए, उतना दु:ख है वहाँ तो! सुनते ही आज के लोग मर जाए, कि 'अरेरे... ओहोहो, मर गया', प्राण निकल जाएँ। इसलिए ऐसा मत बोलना, वर्ना *नियाणां* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक वस्तु की कामना करना) हो जाएगा।

भूल से भी उन्हें परोक्ष मत मानना

अन्य जगह पर सीमंधर स्वामी की मूर्तियाँ स्थापित हैं। कितनी सारी जगहों पर स्थापित होंगी लेकिन यह मेहसाणा के मंदिर जैसी होनी चाहिए, तो इस देश का कल्याण हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : वह कल्याण कैसे होगा?

दादाश्री : सीमंधर स्वामी जो तीर्थंकर हैं, वर्तमान तीर्थंकर हैं, उन्हें मूर्ति के रूप में भजे। ऐसा मानो न कि भगवान महावीर होते, भगवान महावीर के समय में हम होते और ऐसा होता कि वे विहार करते करते इस तरफ नहीं आ पाते और हम वहाँ उनके पास नहीं जा पाते, तो अगर हम यहाँ 'महावीर, महावीर' करते तो हमें प्रत्यक्ष के समान ही लाभ होता न? लाभ होता या नहीं?

प्रश्नकर्ता : होता।

दादाश्री : वर्तमान तीर्थंकर अर्थात्? वर्तमान तीर्थंकर के परमाणु ब्रह्मांड में घूमते हैं, वर्तमान तीर्थंकर से बहुत लाभ होता है!

प्रश्नकर्ता : मैं घर बैठकर सीमंधर स्वामी को याद करूँ और मंदिर जाकर याद करूँ, उसमें फर्क है क्या?

दादाश्री : हाँ, फर्क पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : क्योंकि मंदिर में प्रतिष्ठा की हुई है, प्राणप्रतिष्ठा की है, इसलिए?

दादाश्री : प्रतिष्ठा की है और वहाँ पर देवताओं का रक्षण अधिक रहता है न! इसलिए वहाँ ऐसा वातावरण होता है, जिससे वहाँ असर ही ज़्यादा होता है न! जैसे तुम दादा जी का मन में स्मरण करो और यहाँ पर करो, उसमें फर्क तो बहुत पड़ता है न?

प्रश्नकर्ता : दादा जी, आप तो जीवंत हैं।

दादाश्री : उतने ही जीवंत वे भी हैं। जितने जीवंत ये दादा जी हैं, उतने ही जीवंत वे हैं। अज्ञानियों के लिए ये दादा जी जीवंत हैं और ज्ञानी के लिए तो वे भी उतने ही जीवंत हैं। क्योंकि उसमें जो भाग दृश्यमान है, वह पूरा मूर्ति ही है। मूर्ति के अलावा और कुछ नहीं है। पाँच इन्द्रियगम्य है, उसमें अमूर्त नाम मात्र का भी नहीं है। सब मूर्त ही है और इस मूर्ति में फर्क नहीं है, डिफरेन्स नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यहाँ पर अमूर्त है और वहाँ मूर्ति में अमूर्त नहीं है, ऐसा मानते हैं न?

दादाश्री : वहाँ अमूर्त नहीं है लेकिन मूर्ति में उनकी प्राणप्रतिष्ठा की हुई होती है। वह तो जैसा प्रतिष्ठा का बल! इनकी तो बात ही अलग है न! प्रकट भगवान की बात ही अलग है! प्रकट नहीं होते, तब क्या से क्या हो जाए।

प्रश्नकर्ता : और प्रकट तो होते ही नहीं, बहुत काल तक तो।

दादाश्री : और वे नहीं हों तो भूतकालीन तीर्थंकर, अपने चौबीस तीर्थंकर तो हैं ही न!

हितकारी वर्तमान तीर्थंकर ही

प्रश्नकर्ता : दादा, ये मंदिर वगैरह सब बन रहे हैं तो उनमें वास्तव में आत्मा का भाव करना है न? मंदिर वगैरह का क्या काम है? वास्तव में तो हमें आत्मा का ही रास्ता खोजना है न?

दादाश्री : मंदिर अवश्य बनाने चाहिए। जो चले गए हैं, उनका मंदिर बनाने का क्या अर्थ है? सीमंधर स्वामी हाज़िर हैं, तो उनके दर्शन करे तो कल्याण हो जाएगा। वे प्रत्यक्ष हैं, इसलिए कल्याण हो जाएगा। ऐसा कुछ होगा तो इन लोगों का कल्याण होगा, निमित्त चाहिए। यानी सीमंधर स्वामी का संकेत अवश्य फलदायी है। अतः जिन लोगों ने ज्ञान नहीं लिया हो और वहाँ मंदिर में सीमंधर स्वामी के दर्शन करें, तो भी फल है उसमें, इसीलिए ये मंदिर बना रहे हैं, वर्ना अपने यहाँ कहीं ऐसा होता होगा? हमें शोभा नहीं देता, यह सब। और फिर ये तो जीवंत तीर्थंकर हैं, इसलिए बात कर रहे हैं। दूसरे भूतकालीन तीर्थंकरों के बारे में बात करने का अर्थ ही नहीं। अन्य चाहिए उतने मंदिर हैं ही। उनकी भी ज़रूरत है। हम उसके लिए मना नहीं करते, क्योंकि वह मूर्ति पूजा है और भूतकालीन तीर्थंकरों की है।

यह इच्छा है 'हमारी'

दुनिया में मतभेद कम कर देने हैं। मतभेद दूर होंगे न, तब इस बात को सही रूप से समझेंगे। ये मतभेद तो इतने सारे कर दिए हैं कि यह शिव की एकादशी और यह वैष्णव की एकादशी, एकादशियाँ भी अलग अलग! इसलिए मैंने मंत्र एक साथ कर दिए हैं और मंदिर अलग-अलग रखे हैं क्योंकि यह एक प्रकार की बिलीफ है। शिव में कृष्ण को मत मिलाओ, लेकिन इन मंत्रों को साथ में रखो क्योंकि मन जो है, वह हमेशा शांत रहना चाहिए न? इन लोगों ने ये सभी मंत्र बाँट लिए थे। मैं इन सभी को साथ मिलाकर ऐसी प्रतिष्ठा करूँगा कि लोग धीरे-धीरे ये सारे मतभेद भूल जाएँ। यह इच्छा है हमारी, अन्य कोई इच्छा नहीं है।

हिंदुस्तान ऐसी स्थिति में नहीं रहना चाहिए। जैन इस स्थिति में

नहीं रहने चाहिए। सीमंधर स्वामी का मंदिर, वह मूर्ति का मंदिर नहीं है! वह अमूर्त का मंदिर है!

आरती, सीमंधर स्वामी की

इस समय जो भगवान ब्रह्मांड में हाज़िर हैं, उनकी आरती ये लोग करते हैं, वह 'दादा भगवान' थ्रू करते हैं और मैं वह आरती उन तक पहुँचाता हूँ। मैं भी उनकी आरती करता हूँ। डेढ़ लाख साल से भगवान हाज़िर हैं, उन्हें पहुँचाता हूँ।

आरती में सभी देवी-देवता हाज़िर रहते हैं। ज्ञानी पुरुष की आरती सीमंधर स्वामी को ठेठ तक पहुँचती है। देवी-देवता क्या कहते हैं कि जहाँ परमहंस की सभा हो, वहाँ हम हाज़िर रहते हैं। अपनी यह आरती भले ही किसी भी मंदिर में गाओ तो भगवान को हाज़िर होना ही पड़ता है।

अनन्य भक्ति, वहाँ दिया जा सकता है

हमें मोक्ष में जाना है तो महाविदेह क्षेत्र में जा सकें उतना पुण्य चाहिए। यहाँ आप सीमंधर स्वामी के लिए जितना करोगे, आपका उतना सब आ गया। इतना करो तो बहुत हो गया। उसमें ऐसा नहीं है कि यह कम है। आपने जो सोचा हो (दान देने के लिए) वैसा करो तो सब कुछ हो गया। फिर उससे ज़्यादा करने की ज़रूरत नहीं है। फिर अस्पताल बनाओ या और कुछ बनाओ। वह सब अलग रास्ते पर जाता है। वह भी पुण्य है लेकिन संसार में ही रखता है और यह पुण्यानुबंधी पुण्य, जो मोक्ष में जाने में हेल्प करता है!

यह अनंत जन्मों का घाटा पूरा करना है और एक ही जन्म में पूरा करना है। इसलिए पूरी तरह मेरे पीछे पड़ना चाहिए लेकिन वह तो आपके बस की बात नहीं है। अत: उनके साथ तार जोड़ देता हूँ क्योंकि वहाँ पर जाना है। यहाँ से सीधा मोक्ष होने वाला नहीं है। अभी एक जन्म और बाकी रहेगा। उनके पास बैठना है इसलिए संधान करा देता हूँ और ये भगवान पूरे वर्ल्ड का कल्याण करेंगे।

जो नाम लेगा, उसके दु:ख जाएँगे

प्रश्नकर्ता : आप सीमंधर स्वामी का मंदिर इसलिए बनवाते हैं ताकि फिर सभी उस प्रकार से आगे बढ़ सकें?

दादाश्री : सीमंधर स्वामी का नाम लेंगे, तभी से परिवर्तन होने लगेगा।

प्रश्नकर्ता : सद्गुरु के बगैर तो नहीं पहुँच पाएँगे न?

दादाश्री : सद्गुरु तो मोक्ष में जाने का साधन होते हैं लेकिन इन लोगों के जो दु:ख हैं, वे सभी चले जाएँगे। पुण्य के उदय में परिवर्तन होता रहेगा। इससे इन बेचारों को दु:ख नहीं रहेगा। ये सभी कितने दु:खों में फँसे हुए हैं। प्रत्यक्ष सद्गुरु मिलें और आत्मज्ञान मिले तो फिर मोक्ष होगा। वर्ना नहीं मिला तो पुण्य तो भोगेगा बेचारा। अच्छा कर्म तो बाँधेगा।

दर्शन का सही तरीका

भगवान के मंदिर में या जिनालय में जाकर, सही तरीके से दर्शन करने की इच्छा हो तो, मैं तुम्हें दर्शन करने का सही तरीका सिखलाऊँ। बोलो, है किसी की इच्छा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, है। सिखाइए दादा जी। कल से ही उसके अनुसार दर्शन करने जाएँगे।

दादाश्री : भगवान के मंदिर में जाकर कहना कि, ''हे वीतराग भगवान! आप मेरे भीतर ही बैठे हैं लेकिन मुझे इसकी पहचान नहीं हुई। इसलिए आपके दर्शन कर रहा हूँ। यह मुझे 'ज्ञानी पुरुष' दादा भगवान ने सिखाया है। इसलिए इस प्रकार आपके दर्शन कर रहा हूँ। तो मुझे मेरी खुद की पहचान हो, ऐसी आप कृपा करें।'' जहाँ जाओ वहाँ इस प्रकार से दर्शन करना। यह तो अलग अलग नाम दिए हैं। 'रिलेटिवली' अलग-अलग हैं, सभी भगवान 'रियली' एक ही हैं।

बस, एक को ही

एक तीर्थंकर राज़ी हो जाए तो अपने लिए बहुत हो गया! एक

घर में जाने की जगह हो तो भी बहुत हो गया न! सभी घरों में कहाँ फिरें? और एक को पहुँचा तो सभी को पहुँच गया और जो सभी को पहुँचाने गए, वे रह गए। अपने लिए एक ही अच्छे, सीमंधर स्वामी! सभी को पहुँच जाता है।

इसलिए सीमंधर स्वामी का ठीक से ध्यान लगाओ। 'प्रभु, सदा के लिए आपका अनन्य शरण दीजिए' ऐसा माँगो।

प्रतिकृति से यहीं पर प्राप्ति

प्रश्नकर्ता : दादा जी, सीमंधर स्वामी को ऐसा होता होगा न कि ये दादा जी मेरा काम कर रहे हैं?

दादाश्री : ऐसा नहीं है लेकिन तुम याद करो तो तुम्हें फल मिलता है। सिद्ध भगवंतों को याद करो तो फल नहीं मिलेगा। ये देहधारी हैं। तुम एक जन्म के बाद वहाँ जा सकते हो। वहाँ उनके शरीर को तुम हाथ से छू सकोगे।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा जी, हमें चान्स मिलेगा न?

दादाश्री : सब मिलेगा। क्यों नहीं मिलेगा? सीमंधर स्वामी के नाम का ही तो तुम रटन करते हो। सीमंधर स्वामी को तुम नमस्कार करते हो। वहीं पर तो जाना ही है हमें, इसलिए हम उनसे कहते हैं कि 'साहब! आप भले ही वहाँ बैठे, हमें नहीं दिखाई देते, लेकिन यहाँ हम आपकी प्रतिकृति बनाकर भी आपके दर्शन करते रहते हैं।' बारह फुट की मूर्ति रखकर भी हम उनके दर्शन करते हैं, उन्हें याद करते हैं, क्योंकि यह जीवित भगवान की प्रतिकृति है, तो अच्छा रहता है। जो गए उसके दस्तखत काम नहीं आते, उनकी प्रतिकृति बनाकर क्या लाभ? ये तो काम आते हैं। ये तो अरिहंत भगवान!

प्रश्नकर्ता : ये सभी 'दादा भगवान' का कीर्तन कर रहे थे, तब आप भी कुछ बोलकर कीर्तन कर रहे थे, वह किसका?

दादाश्री : मैं भी बोल रहा था न! मैं 'दादा भगवान' को नमस्कार करता हूँ। 'दादा भगवान' की तीन सौ साठ डिग्री हैं। मेरी

तीन सौ छप्पन डिग्री हैं। मेरी चार डिग्री कम हैं। इसलिए मैंने पहले बोलना शुरू किया ताकि ये सब बोलें। इनकी भी डिग्रियाँ कम हैं न!

प्रश्नकर्ता : आप जिन्हें 'दादा भगवान' कहते हैं, वे और ये सीमंधर स्वामी, इनके बीच क्या संबंध है?

दादाश्री : ओहोहो! वे तो एक ही हैं। लेकिन सीमंधर स्वामी दिखाने का कारण यह है कि अभी मैं देह के साथ हूँ, मुझे भी वहाँ जाने की ज़रूरत है। क्योंकि जब तक सीमंधर स्वामी के दर्शन नहीं होते, तब तक मुक्त नहीं हो सकेंगे। एक अवतार शेष रहेगा। मुक्ति तो, जो मुक्त हो चुके हैं, उनके दर्शन से मिलेगी। यों तो मुक्त मैं भी हुआ हूँ लेकिन वे संपूर्ण मुक्त हैं। वे हमारी तरह लोगों से ऐसा नहीं कहते कि 'ऐसे आना और वैसे आना। मैं तुम्हें ज्ञान दूँगा' ऐसी खटपट नहीं करते।

'सीमंधर स्वामी के असीम जय जयकार हो' बोल सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : 'सीमंधर स्वामी को निश्चय से नमस्कार करता हूँ', ऐसा जो बोलते हैं, तो निश्चय से ही बोलना है या व्यवहार से बोलना है?

दादाश्री : निश्चय से। और देह तो आकुल-व्याकुल होगी, हमें देह के साथ लेना-देना नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् 'मैं सीमंधर स्वामी को निश्चय से नमस्कार करता हूँ', ऐसे जो बोलता हूँ, वह सही है न?

दादाश्री : सही है। व्यवहार से यानी देह से। इस नमस्कार विधि में जो अन्य हैं न, वह सब व्यवहार से हैं। यहाँ यह एक ही नमस्कार निश्चय से है।

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान' का निश्चय से है?

दादाश्री : हाँ, बस। यानी वास्तव में यहीं पर आपको निश्चय से नमस्कार करने चाहिए और बाकी सभी भगवंतों को व्यवहार से नमस्कार करता हूँ। अब सीमंधर स्वामी के लिए निश्चय से बोलो तो हर्ज नहीं है, वह तो अच्छी बात है। वहाँ हम निश्चय लिखेंगे तो सभी जगह निश्चय लिखना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : हाँ, हाँ, ठीक है।

दादाश्री : सिर्फ 'दादा भगवान' को ही निश्चय से किया।

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान ना असीम जय जयकार हो', जैसे बुलवाते हैं, उस प्रकार से 'सीमंधर स्वामी ना असीम जय जयकार हो' बोल सकते हैं?

दादाश्री : खुशी से बोल सकते हैं लेकिन 'दादा भगवान' के जय-जयकार बोलते समय भीतर जो आनंद होता है, वैसा आनंद उसमें नहीं होगा। क्योंकि ये प्रत्यक्ष हैं। वह प्रत्यक्ष आप देख नहीं सकते लेकिन बोल सकते हैं। सीमंधर स्वामी के लिए जो चाहो बोल सकते हो क्योंकि वे हमारे शिरोमान्य भगवान हैं और रहेंगे। जब तक हम सब मुक्त नहीं हुए हैं, तब तक शिरोमान्य रहेंगे। यह तो हमने अँगुलिनिर्देश किया है, कि ऐसा जिसे करना आ गया, तो उसका कल्याण हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : हाँ, अँगुलिनिर्देश है। सब ठीक है।

दादाश्री : यह सब अँगुलिनिर्देश है। अब तक किसी ने अँगुलिनिर्देश नहीं दिया था, क्या करें फिर! सभी बातें बताई होंगी लेकिन अँगुलिनिर्देश नहीं किया कि ऐसा करो!

प्रश्नकर्ता : यह तो मैंने उस दिन बुलवाया था न, तब एक भाई ने कहा कि ऐसा नहीं बोल सकते। निश्चय से नहीं बोल सकते, इसलिए मैंने पूछा।

दादाश्री : नहीं, ऐसा बोले हों तो हर्ज नहीं। इससे कुछ पाप लगे ऐसा नहीं। लेकिन यदि ज्ञानी पुरुष के कहे अनुसार बोले न, तो उसमें बहुत फर्क पड़ जाता है। बोले चुके हों, तो उसका जोखिम नहीं है। प्रतिक्रमण नहीं करना पड़ेगा। सीमंधर स्वामी का सिर्फ नाम भी लेगा, तो उसे फायदा हो जाएगा।

जहाँ प्योरिटी, वहाँ तैयारी

हमारा ध्येय क्या है? मैं तो अपने खर्च से कपड़े पहनता हूँ। ये नीरू बहन भी अपने खर्च से कपड़े पहनती हैं। एक पाई किसी से लेनी नहीं और जगत् कल्याण के लिए सभी तैयारी है। करीब

पचास हज़ार समकितधारी मेरे पास हैं और उनमें दो सौ ब्रह्मचारी हैं। वे सभी जगत् कल्याण के लिए तैयार हो जाएँगे।

आज्ञा बनाए, महाविदेह के लायक

यह ज्ञान लेने के बाद आपका यह जन्म ही महाविदेह क्षेत्र जाने के लिए लायक बन रहा है। मुझे कुछ करने की ज़रूरत नहीं। नैचुरल (प्राकृतिक) नियम ही है।

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में किस तरह जा सकते हैं, पुण्य से?

दादाश्री : यह हमारी आज्ञा का पालन करें, उससे इस जन्म में पुण्य बंध ही रहा है, वह महाविदेह क्षेत्र में ले जाता है। आज्ञा पालन से धर्मध्यान होता है, वह सब फल देगा। जितनी हमारी आज्ञा पालते हैं, उतना पुण्य बंधता है। उससे फिर, वहाँ पर तीर्थंकर के पास फल भोगने पड़ेंगे।

प्रश्नकर्ता : हम महात्माओं का कचरे जैसा आचार देखकर सीमंधर स्वामी हमें वहाँ रखेंगे?

दादाश्री : उस घड़ी ऐसे आचार नहीं रहेंगे। अभी आप जो मेरी आज्ञा का पालन करते हो, उसका फल उस वक्त सामने आएगा। अभी जो कचरा माल है, वह मुझे पूछे बगैर भरा था, वह निकल रहा है।

प्रश्नकर्ता : दादा जी, सीमंधर स्वामी को याद करने से, सीमंधर स्वामी के पास जा सकें, ऐसा निश्चित हो सकता है?

दादाश्री : जाना है, यह तो निश्चित ही है। उसमें नया कुछ नहीं लेकिन लगातार याद रहने से दूसरा कुछ नया अंदर घुसेगा नहीं। दादा जी याद रहते हों या तीर्थंकर याद रहते हों तो माया नहीं घुसेगी! अभी यहाँ माया नहीं आती।

ज़िम्मेदारी किसकी ली?

हमारा सीमंधर स्वामी के साथ संबंध है। हमने सभी महात्माओं के मोक्ष की ज़िम्मेदारी ली हैं। जो हमारी आज्ञा पालेंगे, उनकी ज़िम्मेदारी हम लेते हैं।

यह ज्ञान पाने के बाद एकावतारी होकर, सीमंधर स्वामी के

पास जाकर वहाँ से मोक्ष में चला जाता है। किसी के दो अवतार भी हों लेकिन चार अवतार से अधिक तो नहीं ही होंगे, यदि हमारी आज्ञा पाले तो। यहीं पर मोक्ष हो जाए। 'यहाँ एक भी चिंता हो तो दावा दायर करना' ऐसा कहते हैं। यह तो वीतराग विज्ञान है। चौबीस तीर्थंकरों का सम्मिलित विज्ञान है।

सिर्फ सीमंधर स्वामी ही हमारे *ऊपरी*

प्रश्नकर्ता : हमारे तो आप रखवाले हैं लेकिन आपके ऊपर कौन है? आपको तो नियम से ही चलना पड़ता है न, जो भी आए उसके साथ?

दादाश्री : बहुत ही नियमपूर्वक! और हमारे *ऊपरी* तो ये बैठे हैं न, सीमंधर स्वामी, सिर्फ वे ही हैं! वे ही *ऊपरी* (बॉस) हैं हमारे। हम उनसे कुछ माँग नहीं करते। माँग नहीं हो सकती न! आप मुझ से माँग सकते हैं!

अहो! वह अद्भुत दर्शन!

प्रश्नकर्ता : हम तो दादा का वीज़ा बताएँगे।

दादाश्री : वीज़ा दिखलाते ही अपने आप काम हो जाएगा। तीर्थंकर को देखते ही आपके आनंद की सीमा नहीं रहेगी, देखते ही आनंद! पूरा जगत् विस्मृत हो जाएगा! संसार में कुछ खाना-पीना नहीं भाएगा। उस घड़ी पूरा हो जाएगा। निरालंब आत्मा प्राप्त होगा! फिर कोई अवलंबन नहीं रहेगा।

सम्यक् दृष्टि, वही वीज़ा

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है न, तीर्थंकर के दर्शन करे तो मनुष्य को केवलज्ञान हो जाए!

दादाश्री : तीर्थंकर के दर्शन तो बहुत लोगों ने किए थे। हम सभी ने किए थे लेकिन उस समय हमारी तैयारी नहीं थी। दृष्टि परिवर्तन नहीं हुआ था, मिथ्यादृष्टि थी। उस मिथ्यादृष्टि का, तीर्थंकर भी क्या करें? जिसकी सम्यक् दृष्टि हो, उस पर तीर्थंकर की कृपा उतर जाती है।

प्रश्नकर्ता : यानी जिसकी तैयारी हो, उनके (तीर्थंकर के) दर्शन होने से मोक्ष हो जाता है।

दादाश्री : इसलिए हमें यहाँ तैयार हो जाना है। कारण इतना ही है कि तैयार होकर, वीज़ा लेकर जाओ और भले ही कहीं भी जाओगे तो वहाँ कोई न कोई तीर्थंकर मिल जाएँगे।

सीमंधर स्वामी को ही पूजो

हिंदुस्तान में यदि घर-घर सीमंधर स्वामी की फोटो हो तो काम बन जाए क्योंकि वे जीवंत हैं। अगर हमारी फोटो नहीं होगी तो भी चलेगा लेकिन उनकी रखना। भले ही लोग उन्हें पहचाने नहीं और वैसे ही दर्शन करेंगे, तो भी काम हो जाएगा। ये सीमंधर स्वामी के चित्रपट बहुत अच्छे निकाले हैं और जगह जगह पहुँच जाएँगे, तब काम हो जाएगा। वैष्णव, जैन, अन्य सभी घरों में पहुँच जाएँगे। वे हाज़िर हैं, नकद फल देते हैं!

यह मंदिर इसलिए बने हैं कि जगत् सीमंधर स्वामी को पहचान सके। सीमंधर स्वामी कौन हैं, वह जान सके। घर-घर सीमंधर स्वामी के फोटो की पूजा होगी और आरतियाँ होंगी और जगह जगह सीमंधर स्वामी के मंदिर बनेंगे, तब दुनिया का नक्शा कुछ और ही होगा!

मोक्ष स्वरूपी के सानिध्य में

और हम यहाँ पर दिखाई ज़रूर देते हैं लेकिन सीमंधर स्वामी के सामने ही बैठे रहते हैं और वहाँ पर आपको दर्शन करवाते हैं। हमारी उनसे जान-पहचान है, सीमंधर स्वामी हमारे दादा के भी दादा हैं! आखिर में देखा जाए तो हमें जो चाहिए, उसी की ज़रूरत है!

सीमंधर स्वामी के पास बैठे रहो न, उस मूर्ति के पास बैठे रहो न, तो भी हेल्प होगी। मैं भी बैठा रहता हूँ न, मुझे तो मोक्ष मिल गया है, तो भी मैं बैठा रहा हूँ, वर्ना मुझे उनसे क्या काम था? क्योंकि अभी वे मेरे *ऊपरी* हैं। उनके दर्शन करें तब मोक्ष होगा वर्ना मोक्ष नहीं होगा। उनके दर्शन करें, किसके दर्शन? मोक्ष स्वरूप के। देह सहित जिनका स्वरूप मोक्ष है।

– **जय सच्चिदानंद**

वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी से प्रार्थना

हे निरागी, निर्विकारी, सच्चिदानंद स्वरूप, सहजानंदी, अनंतज्ञानी, अनंतदर्शी, त्रैलोक्य प्रकाशक, प्रत्यक्ष-प्रकट ज्ञानी पुरुष श्री दादा भगवान की साक्षी में, आपको अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करके, आपकी अनन्य शरण स्वीकार करता हूँ। हे प्रभु! मुझे आपके चरणकमलों में स्थान देकर अनंतकाल की भयंकर भटकन का अंत लाने की कृपा कीजिए, कृपा कीजिए, कृपा कीजिए।

हे विश्ववंद्य ऐसे प्रकट परमात्म स्वरूप प्रभु! आपका स्वरूप ही मेरा स्वरूप है। परंतु अज्ञानता के कारण मुझे मेरा परमात्मा स्वरूप समझ में नहीं आता। इसलिए आपके स्वरूप में ही मैं अपने स्वरूप का निरंतर दर्शन करूँ ऐसी मुझे परम शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए।

हे परमतारक देवाधिदेव, संसार रूपी नाटक के आरंभ काल से आज दिन के अद्यक्षण पर्यंत, किसी भी देहधारी जीवात्मा के मन-वचन-काया के प्रति, जाने-अनजाने जो अनंत दोष किए हैं, उन प्रत्येक दोषों को देखकर, उनका प्रतिक्रमण करने की मुझे शक्ति दीजिए। इन सभी दोषों की मैं आपसे क्षमा-याचना करता हूँ। आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान करता हूँ। हे प्रभु! मुझे क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए, और मुझसे फिर ऐसे दोष कभी भी न हों, ऐसा दृढ़ निर्धार करता हूँ। इसके लिए मुझे जागृति दीजिए, परम शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए।

अपने प्रत्येक पावन पदचिन्हों पर तीर्थ की स्थापना करनेवाले हे तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी प्रभु! संसार के सभी जीवों के प्रति संपूर्ण अविराधक भाव और सभी समकिती जीवों के प्रति संपूर्ण आराधक भाव, मेरे हृदय में सदा संस्थापित रहे, संस्थापित रहे, संस्थापित रहे। भूत, भविष्य और वर्तमान काल के सर्व क्षेत्रों के सर्व ज्ञानी भगवंतों को मेरा नमस्कार हो, नमस्कार हो, नमस्कार हो। हे प्रभु! आप मुझ पर ऐसी कृपा बरसाइए कि जिससे मुझे इस भरतक्षेत्र में आपके प्रतिनिधि समान किसी ज्ञानी पुरुष का, सत् पुरुष का सत्

समागम हो और उनका कृपाधिकारी बनकर आपके चरणकमलों तक पहुँचने की पात्रता पाऊँ।

हे शासन देव-देवियों! हे पांचागुली यक्षिणी देवी तथा हे चांद्रायण यक्ष देव! हे श्री पद्मावती देवी! हमें श्री सीमंधर स्वामी के चरणकमलों में स्थान पाने के मार्ग में कोई विघ्न न आए, ऐसा अभूतपूर्व रक्षण प्रदान करने की कृपा कीजिए और केवल ज्ञान स्वरूप में ही रहने की परम शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए!

– **जय सच्चिदानंद**

प्रात: विधि

● श्री सीमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ। (5)

● वात्सल्यमूर्ति 'दादा भगवान' को नमस्कार करता हूँ। (5)

● प्राप्त मन-वचन-काया से इस संसार के किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दु:ख न हो, न हो, न हो। (5)

● केवल शुद्धात्मानुभव के अलावा इस संसार की कोई भी विनाशी चीज़ मुझे नहीं चाहिए। (5)

● प्रकट ज्ञानी पुरुष दादा भगवान की आज्ञा में ही निरंतर रहने की परम शक्ति प्राप्त हो, प्राप्त हो, प्राप्त हो। (5)

● ज्ञानी पुरुष 'दादा भगवान' के वीतराग विज्ञान का यथार्थ रूप से, संपूर्ण-सर्वांग रूप से केवल ज्ञान, केवल दर्शन और केवल चारित्र में परिणमन हो, परिणमन हो, परिणमन हो। (5)

❖❖❖❖❖

श्री सीमंधर स्वामी की आरती

जय 'सीमंधर स्वामी, प्रभु तीर्थंकर वर्तमान,
महाविदेह क्षेत्रे विचरता, (2) भरत ऋणानुबंध. जय...

'दादा भगवान' साक्षीए, पहोंचाडुं नमस्कार ...(स्वामी)(2)
प्रत्यक्ष फल पामुं हुं, (2) माध्यम ज्ञान अवतार. जय...

पहेली आरती स्वामीनी, ॐ परमेष्टि पामे ...(स्वामी)(2)
उदासीन वृत्ति वहे, (2) कारण मोक्ष सेवे. जय...

बीजी आरती स्वामीनी, पंच परमेष्टि पामे ...(स्वामी)(2)
परमहंस पद पामी, (2) ज्ञान-अज्ञान लणे. जय...

त्रीजी आरती स्वामीनी, गणधर पद पामे ...(स्वामी)(2)
निराश्रित बंधन छूटे, (2) आश्रित ज्ञानी थये. जय...

चोथी आरती स्वामीनी, तीर्थंकर भावि ...(स्वामी)(2)
स्वामी सत्ता 'दादा' कने, (2) भरत कल्याण करे. जय...

पंचमी आरती स्वामीनी, केवल मोक्ष लहे ...(स्वामी)(2)
परम ज्योति भगवंत 'हुं', (2) अयोगी सिद्धपदे. जय...

एक समय स्वामी खोळे जे, माथुं ढाळी नमशे ...(स्वामी)(2)
अनन्य शरणुं स्वीकारी, (2) मुक्ति पदने वरे. जय...

❖❖❖❖❖

नमस्कार विधि

- प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में विचरते तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (40)

- प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में विचरते ॐ परमेष्ठी भगवंतों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (5)

- प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में विचरते पंच परमेष्ठी भगवंतों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (5)

- प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में विहरमान तीर्थंकर साहबों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (5)

- वीतराग शासन देवी-देवताओं को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (5)

- निष्पक्षपाती शासन देवी-देवताओं को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (5)

- चौबीस तीर्थंकर भगवंतों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (5)

- श्री कृष्ण भगवान को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।(5)

- भरत क्षेत्र में हाल विचरते सर्वज्ञ श्री दादा भगवान को निश्चय से अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (5)

- दादा भगवान के सर्व समकितधारी महात्माओं को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (5)

- सारे ब्रह्मांड के समस्त जीवों के रियल स्वरूप को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (5)

- रियल स्वरूप ही भगवत् स्वरूप है, इसलिए सारे विश्व को भगवत् स्वरूप से दर्शन करता हूँ। (5)

- रियल स्वरूप ही शुद्धात्म स्वरूप है, इसलिए सारे विश्व को शुद्धात्म स्वरूप से दर्शन करता हूँ। (5)

- रियल स्वरूप ही तत्त्व स्वरूप है, इसलिए सारे विश्व को तत्त्वज्ञान रूप से दर्शन करता हूँ। (5)

(वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी को परम पूज्य दादा भगवान के माध्यम द्वारा प्रत्यक्ष नमस्कार पहुँचते हैं। कोष्ठक में लिखी संख्यानुसार उतनी बार प्रतिदिन बोलें।)

❖❖❖❖❖

दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें

1. आत्मसाक्षात्कार
2. ज्ञानी पुरुष की पहचान
3. सर्व दु:खों से मुक्ति
4. कर्म का सिद्धांत
5. आत्मबोध
6. मैं कौन हूँ ?
7. पाप-पुण्य
8. भुगते उसी की भूल
9. एडजस्ट एवरीव्हेयर
10. टकराव टालिए
11. हुआ सो न्याय
12. चिंता
13. क्रोध
14. प्रतिक्रमण (सं, ग्रं)
16. दादा भगवान कौन ?
17. पैसों का व्यवहार (सं, ग्रं)
19. अंत:करण का स्वरूप
20. जगत कर्ता कौन ?
21. त्रिमंत्र
22. भावना से सुधरे जन्मोंजन्म
23. चमत्कार
24. प्रेम
25. समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य (सं, पू, उ)
28. दान
29. मानव धर्म
30. सेवा-परोपकार
31. मृत्यु समय, पहले और पश्चात्
32. निजदोष दर्शन से... निर्दोष
33. पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार (सं)
34. क्लेश रहित जीवन
35. गुरु-शिष्य
36. अहिंसा
37. सत्य-असत्य के रहस्य
38. वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी
39. माता-पिता और बच्चों का व्यवहार(सं)
40. वाणी, व्यवहार में... (सं)
41. कर्म का विज्ञान
42. सहजता
43. आप्तवाणी - 1
44. आप्तवाणी - 2
45. आप्तवाणी - 3
46. आप्तवाणी - 4
47. आप्तवाणी - 5
48. आप्तवाणी - 6
49. आप्तवाणी - 7
50. आप्तवाणी - 8
51. आप्तवाणी - 9
52. आप्तवाणी - 12 (पू, उ)
54. आप्तवाणी - 13 (पू, उ)
56. आप्तवाणी - 14 (भाग-1 से 3)
59. ज्ञानी पुरुष (भाग-1)
60. व्यसन मुक्ति का मार्ग

(सं - संक्षिप्त, ग्रं - ग्रंथ, पू - पूर्वार्ध, उ - उत्तरार्ध)

★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा गुजराती भाषा में भी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई है। वेबसाइट **www.dadabhagwan.org** पर से भी आप ये सभी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।

★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा हर महीने हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषा में ''दादावाणी'' मैगेज़ीन प्रकाशित होता है।

संपर्क सूत्र

दादा भगवान परिवार

अडालज : **त्रिमंदिर**, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे,
(मुख्य केन्द्र) पोस्ट : अडालज, जि.-गांधीनगर, गुजरात - 382421
फोन : +91 79 3500 2100, +91 9328661166/77
E-mail : info@dadabhagwan.org

मुंबई : **त्रिमंदिर,** ऋषिवन, काजुपाडा, बोरिवली (E)
फोन : 9323528901

पुणे : **त्रिमंदिर,** पुणे-बेंगलुरू हाईवे, खेड़ शिवापुर के पास,
वर्वे बुद्रुक, जिला-पुणे, महाराष्ट्र **फोन :** 7203098409

दिल्ली	9810098564	**बेंगलुरू**	9590979099
कोलकता	9830093230	**हैदराबाद**	9885058771
चेन्नई	7200740000	**पुणे**	7218473468
जयपुर	8890357990	**जलंधर**	9814063043
भोपाल	6354602399	**चंडीगढ़**	9780732237
इन्दौर	6354602400	**कानपुर**	9452525981
रायपुर	9329644433	**सांगली**	9423870798
पटना	7352723132	**भुवनेश्वर**	8763073111
अमरावती	9422915064	**वाराणसी**	9795228541

U.S.A. : **DBVI Tel. :** +1 877-505-DADA (3232),
Email : info@us.dadabhagwan.org

U.K. : +44 330-111-DADA (3232)

Kenya : +254 795-92-DADA (3232)

UAE : +971 557316937

Dubai : +971 501364530

Australia : +61 402179706

New Zealand : +64 21 0376434

Singapore : +65 91457800

www.dadabhagwan.org

सीमंधर स्वामी

घर घर में सीमंधर स्वामी की पूजा और आरती होगी और जगह जगह सीमंधर स्वामी के मंदिर निर्मित होंगे, तब दुनिया का रूप कुछ और ही होगा।

– दादाश्री

ISBN 978-93-86289-75-9
9 789386 289759
Printed in India
Price ₹25

DBF - Adalaj